



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्रतिभकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 178]

नई दिल्ली, सोमवार, अप्रैल, 24, 1995/वैशाख 4, 1917

No. 178]

NEW DELHI, MONDAY, APRIL 24, 1995/VAISAKHA 4, 1917

वित्त मंत्रालय
(गजस्व विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 24 अप्रैल, 1995

सं. 26/95-सीमाशुल्क (एनटी)

सा.का.नि. 358(अ) :—केन्द्रीय सरकार, सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) की धारा 156 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, सीमाशुल्क मूल्यांकन (आयातित माल की कीमत का अवधारण) नियम, 1988 का और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम सीमाशुल्क मूल्यांकन (आयातित माल की कीमत का अवधारण) संशोधन नियम, 1995 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. सीमाशुल्क मूल्यांकन (आयातित माल की कीमत का अवधारण) नियम, 1988 के (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् उक्त नियम का गया है) नियम 2 के उपनियम (1) में

खंड (क) के स्थान पर निम्नलिखित खंड रखे जाएंगे, अर्थात् :—

“(क) “संगणित मूल्य” से आयातित माल का इन नियमों के नियम 7 के अनुसार अवधारित मूल्य अभिप्रेत है।

(कक) “निगमनात्मक मूल्य” से इन नियमों के नियम 7 के अनुसार अवधारित मूल्य अभिप्रेत है।”

3. उक्त नियमों के नियम 4 के उपनियम (3) के खंड (ख) में, उपखंड (ii) के पश्चात् निम्नलिखित उपखंड अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“(iii) समरूप माल या वैसे ही माल के लिए संगणित मूल्य :”।

4. उक्त नियमों के नियम 6 के पश्चात् निम्नलिखित नियम अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“6क. जब, संव्यवहार मूल्य उपलब्ध न हो तब मूल्य का अवधारण—यदि आयातित माल के मूल्य का अवधारण नियम 4, नियम 5 और नियम 6 के उपबंधों के अधीन नहीं किया जा सकता है तो मूल्य का अवधारण नियम 7 के उपबंधों के अधीन किया जाएगा या जब मूल्य का अवधारण इस नियम के अधीन नहीं किया जा सकता है तो नियम 7 के

के अधीन किया जाएगा परन्तु तब जब आयातकर्ता के अनुरोध पर और उचित अधिकारी के अनुमोदन से नियम 7 और नियम 7क के लागू होने का आदेश उल्ट दिया जाएगा।”।

5. उक्त नियमों के नियम 7 के पश्चात् निम्नलिखित नियम अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“7क. संगणित मूल्य—नियम 3 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, आयातित माल का मूल्य संगणित मूल्य पर आधारित होगा जिसमें निम्नलिखित राशि होगी :—

- (क) आयातित माल के उत्पादन में लगाई गई सामग्री और गठना या अन्य प्रसंस्करण की लागत या मूल्य;
- (ख) लाभ और साधारण व्ययों के लिए रकम, जो मूल्यांकित किए जा रहे माल के उसी वर्ग या किस्म के माल के जो निर्यात के देश में उत्पादकों द्वारा भारत को निर्यात के लिए बनाए जाते हैं, विक्रय में प्रायः प्रतिबिम्बित रकम के बराबर होंगी;
- (ग) इन नियमों के नियम 9 के उपनियम (2) के अधीन अन्य सभी व्ययों की लागत या मूल्य।”।

6. उक्त नियमों के नियम 8 के उपनियम (2) में, खंड (iii) के पश्चात्, निम्नलिखित खंड अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“(iii)क) ऐसे संगणित मूल्य से भिन्न, जो नियम 7क के उपबंधों के अनुसार समरूप या वैसे ही माल के लिए अवधारित किए गए हैं, उत्पादन लागत।”।

7. उक्त नियमों की अनुसूची में—(क) नियम 7 के टिप्पण के पश्चात् निम्नलिखित टिप्पण अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“नियम 7क का टिप्पण

1. साधारण नियम के अनुसार, आयातित माल के मूल्य का अवधारण इन नियमों के अधीन भारत में आसानी से उपलब्ध जानकारी के आधार पर किया जाता है। तथापि, संगणित मूल्य का अवधारण करने के लिए मूल्यांकित किए जा रहे माल की उत्पादन लागत और ऐसी अन्य जानकारी, जो भारत के बाहर से प्राप्त की जानी है, परीक्षा करना आवश्यक होगा। इसके अतिरिक्त, अधिकांश मामलों में, माल का उत्पादक उचित अधिकारी की अधिकारिता के बाहर होगा। संगणित मूल्य पद्धति का उपयोग सामान्यतः उन मामलों तक सीमित किया जाएगा जहां क्रेता और विक्रेता नातेदार हैं और उत्पादक उचित अधिकारी को आवश्यक लागत का प्रदाय करने और ऐसे किसी अन्य पश्चात्त्वर्ती सत्यापन के लिए जो आवश्यक हो, सुविधाएं उपलब्ध कराने की तैयार है।

2. नियम 7क के खंड (क) में निर्दिष्ट “लागत या मूल्य” का अवधारण उत्पादक द्वारा या उसकी ओर से प्रदाय किए गए और मूल्यांकित किए जाने वाले माल के उत्पादन में संबंधित जानकारी के आधार पर किया जाता है। इसे उत्पादक के वारिगन्यिक लेखाओं पर आधारित किया जाना है, परन्तु यह तब तक कि ऐसे लेखा ऐसे देश में, जहां माल का उत्पादन किया जाता है, लागू सामान्यतः स्वीकार्य लेखा सिद्धांतों से संगत हैं।

3. “लागत या मूल्य” के अंतर्गत नियम 9 के खंड (1)(क)(2) और खंड (1)(क)(3) में विनिर्दिष्ट तत्वों की लागत भी होगी। इसके अंतर्गत नियम 9(1)(ख) में विनिर्दिष्ट किसी ऐसे तत्व का, जिसका प्रदाय क्रेता द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आयातित माल के उत्पादन के संबंध में उपयोग करने के लिए किया गया है, नियम 9 के सुसंगत टिप्पण के उपबंधों के अधीन समुचित रूप में प्रभाजित मूल्य भी है। नियम 9(1)(ख)(iv) में विनिर्दिष्ट ऐसे तत्वों का जो भारत में हाथ में लिए जाते हैं, मूल्य केवल उस सीमा तक जोड़ा जाएगा जिससे ऐसे तत्व उत्पादक को भारित किए जाएं। यह समझना है कि संगणित मूल्य का अवधारण करने के लिए इस पैरा में निर्दिष्ट तत्वों की लागत या उनके मूल्य की गणना दो बार नहीं की जाएगी।

4. नियम 7क के खंड (ख) में निर्दिष्ट “लाभ और साधारण व्ययों के लिए रकम” का अवधारण उत्पादक द्वारा या उसकी ओर से दी गई जानकारी के आधार पर किया जाना है जब तक कि उत्पादक के आंकड़े मूल्यांकित किए जा रहे उसी वर्ग या किस्म के माल के, जो निर्यात के देश में उत्पादकों द्वारा भारत को निर्यात के लिए बनाए जाते हैं, विक्रय में प्रायः प्रतिबिम्बित आंकड़ों से असंगत नहीं है।

5. इस संदर्भ में यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि “लाभ और साधारण व्ययों के लिए रकम” को समग्र रूप में लिया जाना है। इसके अनुसार यदि किसी विशिष्ट मामले में उत्पादक के लाभ के आंकड़े कम हैं और उसके साधारण व्यय के आंकड़े अधिक हैं तो उत्पादक का लाभ और साधारण व्यय कुल मिलाकर उससे संगत होगा जो उसी वर्ग या किस्म के माल के विक्रय में प्रायः प्रतिबिम्बित होती है। ऐसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है, उदाहरणार्थ यदि किसी उत्पाद का भारत में उत्पादन आरंभ किया जाता है और उत्पादक आरंभ किए जाने से जुड़े सामान्य अधिक व्ययों की क्षतिपूर्ति करने के लिए मूल्य या कम लाभ स्वीकार करता

है। जहाँ उत्पादक विशिष्ट वाणिज्यिक परिस्थितियों के कारण आयातित माल के अपने विषय पर कम लाभ प्रदर्शित कर सकता है वहाँ उसके वास्तविक लाभ आंकड़ों की हिसाब में निपा जाना चाहिए; परन्तु यह तब जब कि उसके पास उन्हें न्यायोचित ठहराने के लिए विधिमानी वाणिज्यिक कारण हों और उसकी कीमत नियतन नीति, मंत्रालय उद्योग की उस शाखा में की प्राथमिक कीमत नियतन नीतियाँ प्रतिबिम्बित करती हों। ऐसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है, उदाहरणार्थ जहाँ उत्पादक मांग में अकल्पनीय गिरावट के कारण अस्थायी रूप से कीमतें कम करने के लिए बाध्य हो गए हैं या जहाँ वे भारत में उत्पादित माल की श्रृंखला के पूरक के लिए माल का विक्रय करते हैं और प्रतिस्पर्धा बनाए रखने के लिए कम लाभ स्वीकार करते हैं जहाँ लाभ और साधारण व्ययों के लिए उत्पादक के अपने आंकड़े, उन आंकड़ों से संगत नहीं हैं जो कि मूल्यांकित किए जा रहे उसी वर्ग या किस्म के माल के, जो निर्यात के देश में उत्पादकों द्वारा भारत को निर्यात के लिए बनाए जाते हैं, विक्रय में प्रायः प्रतिबिम्बित किए जाते हैं, वहाँ लाभ और साधारण व्ययों के लिए रकम, माल के उत्पादक द्वारा या उसकी ओर से दी गई जानकारी से भिन्न सुसंगत जानकारी पर आधारित की जा सकती है।

6. नियम 7क के खंड (ख) में निर्दिष्ट "साधारण व्यय" के अंतर्गत निर्यात के लिए माल का उत्पादन और विक्रय करने की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लागत आती है जो नियम 7क के खंड (क) के अधीन सम्मिलित नहीं की जाती है।
7. इस बात का अवधारण कि क्या कतिपय माल अन्य माल की तरह उसी वर्ग या किस्म का है, अंतर्गत परिस्थितियों का निर्देश करते हुए प्रत्येक मामले के आधार पर किया जाएगा। नियम 7क के उपबंधों के अधीन प्राधिक लाभ और साधारण व्ययों का अवधारण करते समय, माल के छोटे से छोटे समूह या श्रृंखला का भारत को निर्यात के लिए विक्रय की, जिसके अंतर्गत मूल्यांकित किया जा रहा माल भी है, जिसके लिए आवश्यक जानकारी दी जा सकती है, परीक्षा की जानी चाहिए। नियम 7क के प्रयोजनों के लिए "उसी वर्ग या किस्म के माल" एक ही बेश से होने चाहिए जिसके मूल्यांकित किए जा रहे माल हैं।";

(ख) नियम 8 के टिप्पण में—

- (i) पैरा 2 में "नियम 4 के नियम 7 तक" शब्दों और अंकों के स्थान पर "नियम 4 से नियम 7क तक" शब्द और अंक रखे जाएंगे;

- (ii) पैरा 3 के उपपैरा (क) और उपपैरा (ख) में, "नियम 7" शब्द और अंक के स्थान पर, जहाँ जहाँ वे प्राप्ते हैं, "नियम 7 और नियम 7क" शब्द और अंक रखे जाएंगे।

[फा.सं. 528/122/94-सोनामुख (दोप)]

अतिन एम. बेदी, अपर सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

NOTIFICATION

New Delhi, the 24th April, 1995

NO. 26/95-CUSTOMS|(NT)

G.S.R. 358(E).—In exercise of the powers conferred by section 156 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Customs Valuation (Determination of Price of Imported Goods) Rules, 1988, namely :—

1. (1) These rules may be called the Customs Valuation (Determination of Price of Imported Goods) Amendment Rules, 1995.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In rule 2 of the Customs Valuation (Determination of Price of Imported Goods) Rules, 1988 (hereinafter referred to as the said Rules), in sub-rule (1), for clause (a), the following clauses shall be substituted, namely :—

"(a) "Computed value" means the value imported goods determined in accordance with rule 7A of these rules.

(aa) "deductive value" means the value determined in accordance with rules 7 of these rules".

3. In rule 4 of the said rules, in sub-rule (3) in clause (b), after sub-clause (ii), the following sub-clause shall be inserted, namely:—

"(iii) the computed value for identical goods or similar goods:".

4. After rule 6 of the said rules, the following rule shall be inserted, namely :—

"6A.—Determination of value when transaction value is not available.—If the value of imported goods cannot be determined under the provisions of rules 4, 5, and 6, the value shall be determined under the provisions of rule 7 or, when the value cannot be determined under that rule, under rule 7A : Provided that at the request of the importer, and with the approval of the proper officer, the order of application of rules 7 and 7A shall be reversed."

5. After rule 7 of the said rules, the following rule shall be inserted, namely :—

“7. Computed value.—Subject to the provisions of rule 3, the value of imported goods shall be based on a computed value, which shall consist of the sum of :—

- (a) the cost or value of materials and fabrication or other processing the imported goods;
- (b) an amount for profit and general expenses equal to that usually reflected in sales of goods of the same class or kind as the goods being valued which are made by producers in the country of exportation for export to India;
- (c) the cost or value of all other expenses under sub-rule (2) of rule 9 of these rules.”.

6. In rule 8 of the said rules, in sub-rule (2) after clause (iii), the following clause shall be inserted, namely :—

“(iii a) the cost of production other than computed values which have been determined for identical or similar goods in accordance with the provisions of rule 7A.”.

7. In the Schedule to said rules,—(a) after the Note to rule 7, the following Note shall be inserted, namely :—

“Note to Rule 7A.

1. As a general rule, value of imported goods is determined under these rules on the basis of information readily available in India. In order to determine a computed value, however, it may be necessary to examine the costs of producing the goods being valued and other information which has to be obtained from outside India. Furthermore, in most cases, the producer of the goods will be outside the jurisdiction of the proper officer. The use of the computed value method will generally be limited to those cases where the buyer and seller are related, and the producer is prepared to supply to the proper officer the necessary costings and to provide facilities for any subsequent verification which may be necessary.
2. The “cost or value” referred to in clause (a) of rule 7A is to be determined on the basis of information

relating to the production of the goods being valued supplied by or on behalf of the producer. It is to be based upon the commercial accounts of the producer, provided that such accounts are consistent with the generally accepted accounting principles applied in the country where the goods are produced.

3. The “cost or value” shall include the cost of elements specified in clauses (1)(a)(ii) and (1)(a)(iii) of rule 9. It shall also include the value, apportioned as appropriate under the provisions of the relevant note to rule 9, of any element specified in rule 9(1)(b) which has been supplied directly or indirectly by the buyer for use of connection with the production of the imported goods. The value of the elements specified in rule 9(1)(b)(iv) which are undertaken in India shall be included only to the extent that such elements are charged to the producer. It is to be understood that no cost or value of the elements referred to in this paragraph shall be counted twice in determining the computed value.
4. The “amount for profit and general expenses” referred to in clause (b) of rule 7A is to be determined on the basis of information supplied by or on behalf of the producer unless the producer's figures are inconsistent with those usually reflected in sales of goods of the same class or kind as the goods being valued which are made by producers in the country of exportation for export to India.
5. It should be noted in this context that the “amount for profit and general expenses” has to be taken as a whole. It follows that if, in any particular case, the producer's profit figure is low and his general expenses are high, the producer's profit and general expenses taken together may nevertheless be consistent with that usually reflected in sales of goods of the same class or kind. Such a situation might occur, for example, if a product were being launched in India and the producer accepted a nil or low profit to offset high general expenses associated with the launch. Where the producer can demonstrate a low profit on his sales of the imported goods because of particular commercial circumstances, his actual profit figures

should be taken into account provided that he has valid commercial reasons to justify them and his pricing policy reflects usual pricing policies in the branch of industry concerned. Such a situation might occur, for example, where producers have been forced to lower prices temporarily because of an unforeseeable drop in demand, or where they sell goods to complement a range of goods being produced in India and accept a low profit to maintain competitiveness. Where the producer's own figures for profit and general expenses are not consistent with those usually reflected in sales of goods of the same class or kind as the goods being valued which are made by producers in the country of exportation for export to India, the amount for profit and general expenses may be based upon relevant information other than that supplied by or on behalf of the producer of the goods.

6. The "general expenses" referred to in clause (b) of rule 7A covers the direct and indirect costs of producing and selling the goods for export which are not included under clause (a) of rule 7A.

7. Whether certain goods are "of the same class or kind" as other goods must be determined on a case-by-case basis with reference to the circumstances involved. In determining the usual profits and general expenses under the provisions of rule 7A, sales for export to India of the narrowest group or range of goods, which includes the goods being valued, for which the necessary information can be provided, should be examined. For the purpose of rule 7A "goods of the same class or kind" must be from the same country as the goods being valued.";

(b) in the Note to rule 8—

- (i) in the paragraph 2, for the words and figures "rules 4 to 7", the words and figures "rules 4 to 7A" shall be substituted;
- (ii) in paragraph 3, in sub-paragraphs (a) and (b), for the words and figures "rule 7", wherever they occur, the words and figures "rules 7 and 7A" shall be substituted.

[F. No. 528/122/94-Cus(TU)]
ANIL S. BEDI, Under Secy.

